Saarth E-Journal

Saarth E-Journal of Research

E-mail : sarthejournal@gmail.com
www.sarthejournal.com

ISSN NO : 2395-339X
Peer Reviewed
Vol.8 No.15

Impact Factor
Quarterly
Apr-May-Jun 2023

मैत्रेयी पुष्पा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

डॉ. अजय के. पटेल

सारांश

किसी भी साहित्यकार के कृतित्व को उसके व्यक्तिगत जीवन से और अनुभव से अलग करके आंका नहीं जा सकता। रचनाकार के व्यक्तित्व का अध्ययन उनकी रचनाओं के अध्ययन के लिए सहायक सिद्ध होता है। सर्जक के जीवन और व्यक्तित्व के कई पहलू उसके साहित्य को प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। अतः मैत्रेयी पुष्पा के जीवन एवं साहित्य का उल्लेख करना मेरे शोध प्रबंध के लिए अत्यंत आवश्यक बनता है। जब तक रचनाकार के निजी जीवन को न तलाशा जाए, तब तक उसके साहित्य को समझना अति कठिन और गूढ़ रहस्य ही है। नारी हृदय के अनकहे मूक सच को पूरी तटस्थता और ईमानदारी से मुखर करनेवाली, स्वातंत्र्योत्तर जिंदगी का यथार्थ बोध प्रमाणिकता के साथ चित्रित करनेवाली, प्रेम की विषम परिस्थितियों में नारी के निर्णायक क्षण को द्वंद्व रूप में चित्रित करनेवाली नर-नारी संबंधों के विविध आयामों को सामाजिक जीवन के गहरे प्रश्नों को प्रामाणिकता के साथ रूपायित करनेवाली, नारी के समग्र व्यक्तित्व को यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत करनेवाली लेखिका मानी जाती है। मैत्रेयी पुष्पा नारी-विमर्श के क्षेत्र में सशक्त लेखिका के रूप में साहित्य जगत में दृष्टव्य होती हैं।

चाविरूप शब्द: साहित्य, कृतित्व, जीवन, नारी-विमर्श, लेखिका

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के इतिहास में बीसवीं शती के उत्तरार्द्ध में महिला लेखिकाओं में मैत्रेयी पुष्पा का नाम आदर एवम् सम्मान के साथ लिया जाता है। क्योंकि पुष्पा का सम्पूर्ण

साहित्य नारी-विषयक रहा है। "मैत्रेयी पुष्पा का जन्म ३० नवम्बर, १९४४ को अलीगढ़ जिले के सिकुर्रा गाँव के ब्राह्मण परिवार में हुआ था।" इनका आरंभिक जीवन झाँसी के खिल्ली गाँव में बीता था।मेवाराम के इकलौते पुत्र हीरालाल रहे। ब्राह्मण परिवार के पांडेय गोत्र के हीरालाल का विवाह कस्तूरी से हुआ। प्रथमतः इस दंपत्ति को बेटा हुआ किन्तु वह अल्पजीवी ही रहा । इस दंपति की दूसरी और इकलौती संतान मैत्रेयी रही। इस परिवार की अड़तालीस बीघे खेती रही। इनका मुख्य काम-धंधा किसानी ही रहा । इनके परिवार की बनगत गाँव के जाट या यादव किसानों के परिवार से कतई भिन्न न थी। इनका परिवार अंग्रेजी हुकुमत के जुल्मी लगान का भी शिकार रहा।

डेढ़ साल की अबोध अवस्था में ही मैत्रेयी पितृ-स्नेह से वंचित हो चुकी थी। इस अभाव की पूर्ति मैत्रेयी के दादाजी मेवाराम और माताजी कस्तूरी ने हरसंभव की। दादाजी मैत्रेयी से बेहद स्नेह रखते। मैत्रेयी के लाड़-दुलार में दादाजी ने कोई कमी नहीं छोड़ी। मैत्रेयी की आयु के साथ-साथ उसकी बोध-कक्षा का भी विस्तार हुआ तो वह माँ से पिताजी के बारे में पूछा करती, जिस पर माँ अनुत्तरित हो चलती। मैत्रेयी को स्कूल जाना व पढ़ाई करना कतई रास न आता। लोककथा और गीतकथा की पुरोहितानी खेरापतिन दादी मैत्रेयी को एक विलक्षण स्त्री लगती। मैत्रेयी स्कूल छोड़कर दिन-भर उसी के आगे-पीछे घूमती फिरती। उसके संग बैठकर कभी तन्मयता से स्वर भी जोड़ती। माँ के इगलास जाने पर वह गडरियों के बालकों के साथ भेड़ें चराती फिरती। पढ़ाई में अरुचि के कारण मैत्रेयी को माँ की डाँट-फटकार नहीं अपितु मार-पीट तक सहनी पड़ती। इसी बीच दादाजी का देहांत हुआ और मैत्रेयी अपार स्नेह की छत्रछाया से वंचित हो चली। मैत्रेयी की दुनिया अपनत्व से खाली हो गई।मैत्रेयी पुष्पा को अपनी घरेलू गाय से बेहद लगाव था। दादाजी के न रहने पर गाय बेच दी गई तो मैत्रेयी मुँह खोलकर चीख पड़ी। मैत्रेयी आठ साल की आयु पार कर चुकी थी। माँ ग्राम-सेविका पद पर एक ऐसे गाँव में कार्यरत थी, जहाँ स्कूल की सुविधा न थी। मैत्रेयी को शिक्षा हेतु परिचितों के घर छोड़ चलने के लिए कस्तूरी विवश हो गई थी। यहाँ से मैत्रेयी के बचपन में भटकन का एक सिलसिला-सा बन चला। हर दो साल पर स्कूल बदल जाता था और हम उम्र सहपाठी भी बदल जाते। पराये घरों में मैत्रेयी उपेक्षित, अवहेलित व उत्पीड़ित होती रही। इसका अहसास पाकर माँ ने उसके आश्रित घर भी बदल दिए पर स्थिति में कोई खास अंतर न आया। मैत्रेयी असहाय एवं असुरक्षित बाल जीवन व्यतीत करने के लिए अभिशप्त होती रही। नौकरपेशा माँ पर सवार तरक्की, उन्नति व समाज कल्याण के जुनून के चलते मैत्रेयी के बचपन में संग-सहवासजन्य मातृ-सुख का नितांत अभाव रहा। माँ के हाथ लगी उस डायरीनुमा कॉपी में मैत्रेयी ने लिखा था "मैत्रेयी के भीतर उम्र के कई घट रीते पड़े हैं बचपन तो एकदम ठनठन है माँ को आवाज देता बचपन आज भी भीतरी कोनों से टकराता है।" मैत्रेयी बचपन में माँ के संग सहवास व स्नेह के लिए तरसती रही। गाँव-मोहल्ले की औरतें कस्तूरी की कठकरेजता को देखते हुए मैत्रेयी पर दया व रहम की बौछास्सी कर देती। अपने

हम उम्र साथी-साथिनों को माँ-बाप के संग रहते और उनके स्नेह लूटते देखर मैत्रेयी कूढ़ने-कलपने लगती।

मैत्रेयी पुष्पा की शिक्षा

समाज में अपना निश्चित स्थान बनाए रखने के लिए मैत्रेयी पुष्पा की माता जी ने समाज के विरोध और उसकी अवहेलना को सहते हुए शिक्षा प्राप्त की थी। साथ-साथ बेटी के लिए भी कड़ा रुख अपनाया था। मैत्रेयी पुष्पा का आरंभिक जीवन झाँसी के खिल्ली गाँव में व्यतीत हुआ था। लेकिन माताजी की नौकरी के कारण मैत्रेयी को पढ़ाने के लिए उन्होंने अलीगढ़ में समाज कल्याण बोर्ड की संयोजिका के यहाँ रखने का फैसला लिया था। जिससे पढ़ाई में बाधा न पड़े। किन्तु वह अलीगढ़ से अपनी माँ के पास झाँसी आ गयी। वही मोंठ के डी.बी.इण्टर कॉलेज से बारहवीं कक्षा पास की।वह साइकिल से दस किलोमीटर मोंठ तक पढ़ने जाती थी। इस प्रकार उन्होंने बुन्देलखण्ड कॉलेज झाँसी से बी.ए. और हिन्दी साहित्य से एम.ए. तक की परीक्षा पास की है।

पुष्पा जी ने अपनी आत्मकथा 'कस्तूरी कुंडल बसै में 'समाज कल्याण बोर्ड' की संयोजिका के यहाँ रहती थी। तब वह अमानुषिक अत्याचारों का भोग बनी थी। एक बार तो वह बलात्कार का शिकार हो सकती थी। किन्तु प्रतिकार की बदौलत उसका सामना करके, वहाँ से झाँसी भाग आयी थी। जब कॉलेज में कामांध प्रिंसिपल ने मैत्रेयी के साथ शारीरिक छेड़खानी की तो उसके खिलाफ आंदोलन भी किया था। ऐसी यातनाओं, पीड़ाओं और अमानुषिक अत्याचारों का सामना करके उन्होंने अपनी पढ़ाई पूर्ण की थीं।

इस प्रकार मैत्रेयी पुष्पा ने व्यक्तिगत अपमान और अवहेलना को सहकर अपनी पढ़ाई को पूर्ण किया था। वैसे तो एक स्त्री का पुरूष प्रधान या पुरूष अधिकृत वातावरण में पढ़ना अपने आप में एक बहुत बड़ी उपलब्धि ही है क्योंकि भूखे शेर की तरह मानव बर्बरता के सामन लड़कर अपने हक एवम् अधिकारों को प्राप्त करने की गुस्ताखी पुष्पा ही कर सकती थी। वह सामाजिक तौर पर नारी उत्थान एवम् नारी सशक्तिकरण की एक झलक मानी जाती है।

मैत्रेयी पुष्पा का व्यक्तिगत संघर्ष

बड़े-बड़े महान योद्धाओं को देखे तो, उसकी महानता के पीछे उसका व्यक्तिगत संघर्ष छिपा दिखाई देता है। जिस प्रकार सिकन्दर ने पूरे जगत पर विजय पाने के लिए अवर्णित संघर्ष किये। तब जाकर वह महान योद्धा कहलाया इसलिए किसी भी प्रतिष्ठित व्यक्ति की सफलता के पीछे, उनका व्यक्तिगत जीवन संघर्ष छिपा रहता है। उसी प्रकार मैत्रेयी पुष्पा ने निजी जीवन में काफी परेशानियों का सामना किया है। मोंढ इन्टर कॉलेज में पढ़ते वक्त जातीय समस्याओं का सामना निडरता के साथ किया और अपने लक्ष्य की ओर बढ़ती रही। पुष्पा जी का जीवन सरिता के समान है। जिस प्रकार सरिता कितनी सारी मुश्किलों एवं

रुकावटों का सामना करके अपने लक्ष्य समन्दर से मिलाप करती हैं। उसी प्रकार पुष्पा का लक्ष्य पढ़ना था। तो उन्होंने निजी जीवन यात्रा में आनेवाली रुकावटों का सामना बड़ी निर्भीकता के साथ करके लक्ष्य को प्राप्त किया है।

पुष्पा जी का बचपन ग्रामीण परिवेश में व्यतीत हुआ है। युवावस्था में वह झाँसी शहर में आ गई थी क्योंकि माताजी की नौकरी की बदौलत उन्हें कई स्थानों पर घूमना पड़ा था। जिससे वह विविध परिस्थितियों से वाकिफ भी हुई। कॉलेज के शहरी वातावरण में भी उन्हें अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ा। जैसे - मैत्रेयी ने कॉलेज के दिनों से ही लिखना प्रारंभ कर दिया था। उनकी पहली कविता 'जिस बाड़े में वह रहती थी' में उन्होंने काम करनेवाली महिलाओं के ऊपर लिखा था, जो अखबार में छपी थी, जिसे पढ़कर बाड़े के लोग उत्तेजित हो गए और मैत्रेयी जी को वहाँ से कमरा खाली करना पड़ा।

मैत्रेयी पुष्पा ने कविताओं के माध्यम से बाड़े में रहनेवाली मजदूर महिलाओं की समस्या और उनके शारीरिक शोषण की गाथा से उन्हें परिचित करवाया था। वह उनका प्रथम साहसिक कदम था। जिसके फलस्वरूप वह लोगों की नजर में बुरी हो गई और कमरा खाली करना पड़ा था। किन्तु इस बात से पुष्पा को आत्म संतुष्टि थी कि उन्होंने बाड़े की महिलाओं के प्रश्नों को एक नई दिशा जरूर प्रदान की थी।

मैत्रेयी का जीवन अभावग्रस्तता में ही बीता था। उन्होंने शादी के पहले कभी पारिवारिक संरक्षण एवं अपनत्व को प्राप्त नहीं किया था। चूँकि माताजी का जगह-जगह तबादला हो जाता था इसलिए उनके साथ रहने का अवसर कम प्राप्त हुआ था। फिर भी झाँसी की रानी की तरह अपने रास्ते में आनेवाले हर एक बवंडरों का जमके सामना किया था। बचपन से लेकर युवावस्था तक उन्होंने अकेले ही अनेक परेशानियों का मुकाबला किया था। इस प्रकार पुष्पा विभिन्न परिस्थितियों का सामना करती हुई अपनी अलग पहचान बनाती रही है। जिससे उन्हें साहित्य की दहलीज पर सशक्त नारीवादी लेखिका के रूप में पहचाना जाता है।

मैत्रेयी पुष्पा का वैवाहिक बंधन

विवाह के बाद मैत्रेयी अलीगढ़ वासी पति के उस परिवार में आ गई, जहाँ सास के गुजरने से लेकर अब तक ससुर ही गृहस्थी एवं चूल्हे चौके का भार उठा रहे थे। यहाँपरदा प्रथा का सख्त रिवाज रहा। जेठ-ससुर से आड़-मर्यादा तथा घूँघट-परदा के रिवाज और गृहस्थी के नियमों को निभाने में मैत्रेयी ने कोई असावधानी नहीं होने दी। उस समय स्त्रियों का घर में बँधकर रहना ही ज्यादा श्रेयस्कर एवं सुरक्षित माना जाता था। मैत्रेयी भी गृहस्थी में बँधकर रहने लगी। अपने-आपको गृहस्थी में पूरी तरह रोपकर वह घरपरिवार के फलने के सपने देखती रही। मैत्रेयी का दांपत्य-जीवन सुख-दुःख के उतार-चढ़ावों से आपूरित रहा।

मैत्रेयी की पहली बेटी नम्रता का जन्म हुआ, जबकि समाज में बेटी की माँ की स्थिति किसी मुजरिम से कम नहीं थी। फिर इनके दो और बेटियाँ हुईंमोहिता तथा सुजाता। पर

मैत्रेयी को बेटियों के होने का रंचमात्र भी गम न रहा। वह बेटियों को अपनी संरक्षक मानती है। उनकी राय है कि विवाह के जिन बंधनों ने बाँध दिया था उन्हें बेटियों के जन्म ने तोड़ डाला। इसी दरम्यान वह अपने परिवार के साथ दिल्ली आ बसी। वह घर में बँधकर बेटियों को पढ़ाने लगी। नारी जीवन की काँटों भरी गेल से उन्हें आगाह करती रही। तीनों बेटियाँ पढ़-लिखकर डॉक्टर बनीं, जो आज अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (ए.आय.आय.एम.एस.) और निजी प्रेक्टीस में हैं।

स्वयं के प्रवाह में बेटियाँ बड़ी हुई तो मैत्रेयी की गृहस्थी का भार भी धीरे-धीरे कम होने लगा। बड़ी बेटी नम्रता मेडिकल में पढ़ती थी। नम्रता ने माँ को लिखने के लिए उत्प्रेरित किया|नम्रता ने एक प्रसिद्ध लेखिका के जीवन पर बनी टेलीफिल्म उन्हें दिखायी । फिर मैत्रेयी ने लंबे अर्से से गृहस्थी के भारी बोड़ा तले दबी अपनी छात्रावस्था की लेखनगत, अभिरुचि को टटोला| मैत्रेयी ने लिखना शुरू किया पर छपने का डर उन्हें हमेशा घेरे रहता। मैत्रेयी लेखन में इस रवैये के साथ प्रवृत्त हुई कि साहित्य लोगों को कैसे पढ़वाया जाए की चिंता के बजाय ऐसे साहित्य की रचना कैसे हो जिसे लोग पढ़ें। उनकी रचनाएँ छपती रही । आज वे स्वतंत्र रूप से लेखक कार्य कर रही है।

वैसे तो मैत्रेयी ने अपनी आत्मकथा 'कस्तूरी कुंडल बसै' मेंदो-तीन लोगों के नाम का उल्लेख किया है। जिनके प्रति वह समर्पित थी किन्तु परिस्थितियों के वश में होकर उन्होंने अपने दिल की आवाज को दबाया है। पुष्पा के फैसले में आधुनिक और पाश्चात्य विचारों का गहरा प्रभाव दिखाई पड़ता है क्योंकि शिक्षित होने का मतलब ही प्रतिकार करना है। उन्होंने 'चाक' उपन्यास में लिखा है कि "शिक्षा से कुसंस्कार और अज्ञानता दूर होती है, जैसे श्रीधर शिक्षा का अर्थ देते हैं - मर्दों के कुसंस्कारों और अहं की अशिक्षा को मिटाना और निजी स्वार्थों से मुक्त होना ।"

मैत्रेयी पुष्पा: एक विद्रोही स्त्री

पुष्पा के व्यक्तित्व में विद्रोही विचारधारा रही है, जो साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्ति हुई है। यह विचारधारा आगे चलकर नारी-विमर्श की एक मिसाल बनकर शोषितों और पीड़ितों के लिए आधार स्तंभ बन गई है। आज के परिप्रेक्ष्य में पुष्पा का व्यक्तित्व नारियों के लिए श्रेष्ठतम उदाहरण है। जिन्होंने अपने अधिकारों एवम् अस्तित्व के लिए पुरुष समाज व्यवस्था के सामने सिर उठाया है। अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए झाँसी की रानी की तरह रणचण्डी बनी है।

परंपराओं के नाम पर चल रहे अन्यायों को मैत्रेयी स्वीकार नहीं करती उसका विरोध करती है। यह विरोध एक विद्रोही स्त्री के रूप में उभर आता है। जबकि लेखिका का व्यक्तित्व विद्रोही तथा परम्पराओं को तोड़नेवाला है क्या? इसकेजवाब में वह कहती हैं - ''लोक यही कहते हैं । मैं परंपराओं को बंधनों को तोड़ने की कोशिश नहीं करती। वह अपने आप ऐसा रास्ता बन जाता है।'' यह संघर्ष तथा विद्रोह उनके साहित्य में भी दिखाई देता है।

वह अपने साहित्य के माध्यम से नए, स्वस्थ जीवनमूल्यों को निर्माण करना चाहती है। डॉ. दया दीक्षित के शब्दों में -"पुराने सड़े गले रूढ़ विधानों का उच्छेदन तथा उनके स्थान पर स्वस्थ सुलझे जीवन मूल्यों का आरोपण हमें मैत्रेयी की रचना में दिखाई पड़ता है।"

मैत्रेयी पुष्पा: एक निर्भीक स्त्री

मैत्रेयी के व्यक्तित्व में हमें निर्भीकता दिखाई देती है। मैत्रेयी के जीवन में कई घटनाओं में निर्भीक वृत्ति उभरकर सामने आती है। वह नारी जाति के उत्थान के लिए अपने कदम बढ़ाती जा रही है। पत्नी पतिव्रता के नियमों का पालन करें और पति चाहे जिस प्रकार का व्यवहार करें इन बातों को मैत्रेयी स्वीकार नहीं करती। उनका मानना है, "यदि कोई पति अपनी पत्नी की कोमल भावनाओं को कुचलकर खत्म करता है तो पत्नी को पतिव्रत के नियमों का उल्लंघन हर हालत में करना होगा।"

पहली बेटी के जन्म पश्चात् वह सोचती है अगर मैंने दूसरी भी लड़की को जन्मदिया तो मैं उसका नाम आम्रपाली रखूँगी। "आम्रपाली, वेश्या? नहींएक स्वतंत्र औरत।... मुझे आम्रपाली चाहिए क्योंकि वह निडर स्त्री थी? अगर मैंने दूसरी भी लड़की जन्मी तो नाम आम्रपाली ही रखूँगी।" इसी निर्भीक स्वभाव के कारण अल्माबूतरी लिखते समय कबूतरा जैसी गुनाहगारों की बस्ती में स्वयं गयी, अल्मा से प्रत्यक्ष मुलाकात की।लेखन तथा जीवन व्यवहार को लेकर चल रहे इनके विवादों के बाद भी अपने पथ पर वह निर्भीकता से अग्रसर हो रही है।वर्तमान समय में मैत्रेयी नोएडा में रहती हैं और स्वतंत्र रूप से महिला साहित्य सेवा में संलग्न हैं। मैत्रेयी जी का लेखनकार्य स्त्री-विमर्श को एक नई पहचान और पृष्ठभूमि देने में सफल भूमिका अदा कर रही है।

मैत्रेयी पुष्पा की प्रबल इच्छा-शक्ति

मैत्रेयी ने गृहस्थी में अपनेआपको रोपकर बेटियों को उच्च शिक्षित बनाना चाहा था, आज तीनों बेटियाँ "अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान" में डॉक्टर हैं। उन्होंने 'मनुष्य को बेहतर मनुष्य बनानेवाले साहित्य जगत' में आना चाहा था और आज हिन्दी कथाजगतमें शीर्ष स्थान पर आसीन हैं। एक पत्र में वे लिखती है "वादा तुमसे और तुम जैसे भाईयों से यह भी कि अपने और तुम्हारे अनुभवों को इस महानगर में बो जाऊँगी जो कंक्रीट फोड़कर उगेंगे और अट्टालिकाओं पर चढ़ जायेंगे। कहनेवाले कहते रहेंगे यह किताब एक गंवार स्त्री ने लिखी थी - इतना-सा ही अरमान है।"

मैत्रेयी पुष्पा का कृतित्व

मैत्रेयी पुष्पा ने कविता के माध्यम से साहित्य में प्रवेश किया था। परंतु बाद में वह कविता से विमुख हो गयी और गद्य साहित्य में इस तरह स्थापित हो गयी कि महिला लेखन की चर्चा मैत्रेयी पुष्पा के बिना हो ही नहीं सकती। 'लकीरें' उनका पहला काव्यसंग्रह

१९९० में प्रकाशित होने के बाद उनकी कई गद्‌य रचनाएँ प्रकाशित हुईं। कहानी संग्रह, उपन्यास, नाटक, लेख संग्रह तथा आत्मकथात्मक उपन्यास और कुछ पत्र-पत्रिकाओं में समीक्षात्मक लेख समाविष्ट है। मैत्रेयी पुष्पा उम्र की अर्धशती बीतने के बाद साहित्य जगत में अवतरित हुई। उनकी रचनाओं में मौलिकता और गुणात्मक मूल्य प्रतिष्ठित हो चुके हैं। विविध विधाओं में सफल लेखन करने की कला मैत्रेयीजी के पास है। उनकी कृतियाँ मैत्रेयीजी की बहुआयामी रचनात्मक प्रतिभा को उजागर करती हैं तथा लेखन के प्रति गहरी निष्ठा, लगन तथा पूरी ईमानदारी का परचिय देती हैं। उनका मानना है कि, ‘‘साहित्य में गुटबाजी से तथा व्यक्तिगत आक्षेपनुमा लेखन से मुझे क्षोभ होता है कि पाठक हमारे बारे में क्या सोचेंगे?” वेउन लोगों में से भी नहीं हैं जो साहित्य और जीवन में अलग-अलग नज़र आते हैं। उनकी कथनी और करनी में अंतर नज़र नहीं आता । जो उन्होंन लिखा है, भोगा है तथा अनुभव किया है उसी को पूरी ईमानदारी के साथ अपनी रचनाओं में उतारा है। कई बार रचनाओं को लेकर उन पर कीचड़ भी उछाला गया है। परंतु वे निर्भय होकर लिखती रहीं। उन्होंने अपने लेखन में गहरे अनुभव और गंभीर पठन-मनन के बल पर उत्कृष्ट बनाया है। उनकी रचनाओं की उत्कृष्टता पर उन्हें अनेक पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं।मैत्रेयी पुष्पा ने साहित्य की अनेक विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई है। उनके समग्र साहित्य का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

- मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास
- मैत्रेयी पुष्पा के कहानी संग्रह
- मैत्रेयी पुष्पा के निबंध संग्रह
- मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा
- मैत्रेयी पुष्पा के नाटक
- मैत्रेयी पुष्पा के काव्यसंग्रह

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास

- स्मृति दंश
- बेतवा बहती रही
- इदन्नमम्
- चाक
- अल्माबूतरीः)२०००(
- झूला नट
- अगनपाखी
- विजन
- कही ईसुरी फाग
- त्रिया हठ
- गुनाह बेगुनाह

मैत्रेयी पुष्पा के कहानी संग्रह

- ‘चिन्हार’ कहानी संग्रह
- ‘गोमा हँसती है’ कहानी संग्रह
- ‘ललमनियाँ’ कहानी संग्रह

मैत्रेयी पुष्पा के निबंध संग्रह

- खुली खिड़कियाँ
- सुनो मालिक सुनो
- चर्चा हमारा

मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा

- कस्तूरी कुंडल बसै
- गुड़िया भीतर गुड़िया

मैत्रेयी पुष्पा के नाटक

- मंदाक्रांता

मैत्रेयी पुष्पा के काव्यसंग्रह

- लकीरें
- स्त्री-विमर्श
- खुली खिड़कियाँ (२००३)
- सुनो मालिक सुनो (२००६)
- फाइटर की डायरी (२००९)

सम्मान एवं पुरस्कार

- मैत्रेयी पुष्पा को उनकी विभिन्न कृतियों के लिए पुरस्कृत किया गयहै। जिनमें से कुछ पुरस्कार निम्नलिखित है -
- हिन्दी अकादमी द्वारा साहित्य (कृति) सम्मान।
- 'सार्क लिटरेरी अवार्ड' (फैसला कहानी पर टेलीफिल्म वसुमती की चिट्ठी)।
- 'बेतवा बहती रही' को प्रेमचन्द्र सम्मान उत्तर प्रदेश साहित्य संस्थान द्वारा 1995 में दिया गया।'
- उपन्यास 'इदन्नमम्' 1996 में शाश्वती संस्थान बैंगलोर द्वारा नैजनागुड्ड तिरूमालम्बा पुरस्कार दिया गया।
- मध्यप्रदेश साहित्य परिषद द्वारा वीरसिंह देव पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।
- कथा पुरस्कार ‘फैसला’ कहानी 1993
- प्रेमचंद सम्मान (उत्तर प्रदेश साहित्य संस्थान)
- ‘बेतवा बहती रही’ 1995

- 'द हंगर' प्रोजेक्ट (पंचायती राज) का सरोजिनी नायडू पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- साहित्य कृति सम्मान 1991
- मंगला प्रसाद पारितोषिक, 2006
- सुधा स्मृति सम्मान, 2009
- आगरा युनिवर्सिटी, गौरव श्री पुरस्कार, 2011
- वन माली सम्मान, 2011
- कथाक्रम सम्मान, इदन्नमम्, 2000
- महात्मा गांधी सम्मान, 2012

निष्कर्ष

मैत्रेयी जी के जीवन को जानने तथा उनके कथा-साहित्य का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि साधारण परिवार में जन्मे फिर भी अपने कृतित्व के बल पर उन्होंने हिन्दी साहित्य जगत में अपना अस्तित्व निर्माण किया। मैत्रेयी ने शिक्षा प्राप्त करते समय कई मुसीबतों का सामना करना पड़ा। मैत्रेयी धैर्य के साथ उन स्थितियों से संघर्ष करती रही। संघर्ष करते-करते संघर्ष करना मैत्रेयी जी का स्थायी भाव बन गया। परंपराओं का विरोध, व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष यह गुण हमें उनमें देखने को मिलते हैं। उन्होंने अने साहित्य द्वारा नारी चेतना जगाने का प्रयास करती है। हिन्दी साहित्य में मैत्रेयी नारी सशक्तिकरण की प्रणेता के रूप में उभरी है। अपनी कलम की ताकात पर स्त्री चेतना तथा अस्मिता जगाने तथा नारी क्षमता को उजागर करके का प्रयास मैत्रेयी पुष्पा ने किया है। मैत्रेयी पुष्पा की कृतियों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि समाज के प्रत्येक वर्ग की स्त्री को चेतना सम्पन्नता के औजार देती है।

संदर्भ सूची

१. मैत्रेयी पुष्पा, द्वारे प्रकाशन, जागतिक केतलोग।
२. मैत्रेयी पुष्पाका लेखिका प्रोफाइल, रोजी प्रकाशन, २०१३।
३. ग्रामीण स्त्री की अनसुनी कहानी, रोजी प्रकाशन, २०१३।
४. http://www.pressnote.in/Litrature-News_271550.htmlप्रेसनोट
५. गोपाल, राय (२०१४). हिन्दी उपन्यास का इतिहास. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ॰ ३८७.
६. "जोश"**. मूल से २०मार्च २०११को पुरालेखित. अभिगमन तिथि ७जून २०१२.**